श्लेषः →

वाच्यभेदेन भिन्ना युगपद्भाषणस्पृशः।
श्लिष्यन्ति शब्दाः, श्लेषोऽसावक्षरादिभिरष्टधा॥

अर्थभेद होने के कारण भिन्न-2 होकर भी जहाँ शब्द एक उच्चारण के विषय होते हुए श्लिष्ट (एकरूप) प्रतीत होते हैं, वह श्लेष अलङ्कार होता है।

अर्थात् "सकृदुच्चरितः शब्दः सकृदर्थं गमयति" इस न्याय से एक शब्द दो अर्थों की प्रतीति नहीं करा सकता अतः 'अर्थभेदेन शब्दभेदः' यह सिद्धान्त बना। जैसे ~~सैन्धव~~ 'हरि' शब्द का अर्थ विष्णु, सिंह, वानर आदि अर्थ है तो 'हरिः' तीन ~~प्रकार~~ भिन्न-2 आकार ही दो अर्थों का बोध कराते हैं। अतः अनेकार्थक शब्दों के अनेक आकार होते हैं। किन्तु सामानाकार होने के कारण उनका उच्चारण एक ही स्थान प्रयत्न से होने के कारण उनकी भिन्नता प्रतीत नहीं होती। अतः एक शब्द से ही दो अर्थ प्रतीत हो रहे हैं, ऐसा भान होता है। यही श्लेष है।

सकृदुच्चरितः शब्दः सकृदर्थं गमयति इति नियमेन एकेन शब्देनार्थद्वय प्रतीत्यसंभवात् अर्थद्वयप्रतीत्यर्थं (श्लेषस्थले) एकाकारौ द्वौ शब्दौ स्तः इत्यवश्य मङ्गीकार्यम्। तौ च एकेन प्रयत्नेनोच्चार्यतया पृथक्तया नानुभूयेते। तथा च एकप्रयत्नोच्चार्यतया भिन्नत्वेनाननुभूयमानत्वमेव श्लेष इति।" विश्वनाथः

स च वर्ण~~प्रत्यय~~पद-लिङ्ग-भाषा-प्रकृति-प्रत्यय-विभक्ति वचनानां भेदादष्टधा।

वर्णश्लेषः → अलङ्कारः शङ्काकरनरकपालं परिजनो,
विशीर्णाङ्गो भृङ्गी वसु च वृष एको बहुवयाः।
अवस्थेयं स्थाणोरपि भवति सर्वामरगुरोः विधौ वक्रे मूर्ध्निस्थितवति वयं के पुनरमी॥

यहाँ "विधौ" शब्द 'विधि' और 'विधु' दोनों का सप्तमी एकवचन है। इ और उ भिन्न-2 वर्णों का सप्तमी एक० 'औ' होने के कारण श्लेष है।

(1) पद श्लेषः → ~~[illegible]~~।
पृथुकार्त्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव, विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम्। यहाँ पृथुकार्त्तस्वरपात्रं → (1) विपुल स्वर्णपात्रों से युक्त तथा (2) बालकों की आतर ध्वनि से युक्त इत्यादि प्रकार से पद भेद होकर भिन्न एक उच्चारण के द्वारा दो अर्थ का प्रतीत होते हैं अतः पदश्लेष है।

लिङ्ग और वचन श्लेष → "भक्तिप्रह्व विलोकन प्रणयिनी
(पुण्डरीक कुरुतां भवातिशमनं नेत्रे तनुर्वा हरेः)॥"

इस पद्य में अन्तिम चरण में 'नेत्रे' यह नपुं. द्विवचन है तथा 'तनुः' स्त्री. एकवचन है। पूर्व चरणों में ~~...~~ 'प्रणयिनी' 'सफलिनी' आदि इन दोनों के विशेषण हैं, में नपुं. द्वि. और स्त्री. एक. में एक जैसे बनते हैं इस शब्द लिङ्ग श्लेष है। और ② 'भवनिधी' आदि में प्रथमा द्विवचन तथा एकवचन का श्लेष होने के कारण वचन श्लेष भी है।

भाषा श्लेष → "महदे सुरस-धम्मे तमवसमासङ्गमागमाहरणे।
हरबहुसरणं तं चित्तमोहमवसर उमे सहसा॥"

यहाँ 'सहसा' पदों के अतिरिक्त सभी पदों ~~...~~ संस्कृत तथा प्राकृत भाषा का श्लेष है।

प्रकृति श्लेष → अयं सर्वाणि शास्त्राणि हृदि ज्ञेषु च वक्ष्यति।
सामर्थ्यकृदमित्राणां मित्राणां च नृपात्मजः॥

यहाँ पर 'वह' और 'वच' धातु का (लृट् एकवचन में) धातु रूप प्रकृतिश्लेष है। कृत में कृ और कृत धातु का श्लेष है।

प्रत्ययश्लेष → रजनि रमणमौलेः पादपआवलोके ——
अक्षुणितरुचिः स्यान्नन्दिता सा तथा मे॥

यहाँ 'नन्दिता' में नन्द + तृच और नन्द + तल - दोनों का एकरूप हो जाता है, अतः तृच और तल प्रत्यय का श्लेष है इसी प्रकार स्यात् + नन्दिता, और स्यात + नन्दिता से उत्तम और प्रथम पुरुष का श्लेष।

विभक्ति श्लेष → सर्वस्वं हर सर्वस्य त्वं भवच्छेद तत्परः।
नयोपकारसांमुख्यमायासि तनुवर्तनम्॥

यह 'हर' इत्यादि पद सुबन्त सम्बोधन एक. और तिङन्त लोट् मध्यम पु. एक. वचन का श्लेष होने से विभक्ति श्लेष है। सुप और तिङ् का श्लेष होता है।

Sartel-00 Sartel-H 80 Sartel-AM80

Scanned with CamScanner